B.A. Part-I Paper-II

इकाई-(3). हरिभद्र आचार्य का जीवन का परिचय एवं समय कृतियों पर विवेचना करें।

Ans- आचार्य हरिभद्र श्वेताम्बर सम्प्रदाय के विद्याधर गच्छ के शिष्य थे। गच्छपति आचार्य का नाम जिनभद्र, दीक्षागुरु का नाम जिनदत्त एवं धर्ममाता साध्वी जो कि इनके धर्म परिवर्तन में मूल निमित्त हुई। जो इनका नाम याकिनी महत्तरा था। इनका जन्म राजस्थान के चित्रकूट-चित्तौड़ नगर से हुआ था। ये जन्म से ब्राह्मण थे और अपने अद्वितीय पाण्डित्य के कारण वहाँ के राजा जितारि के राज-पुरोहित थे। दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् जैन साधु के रूप में इनका जीवन राजपूताना और गुजरात में विशेषरूप से व्यतीत हुआ। प्रभाव-चरित से अवगत होता है कि इन्होंने पोरवालवंश को सुव्यवस्थित किया था।

आचार्य हरिभद्र के जीवन-प्रवाह को बदलनेवाली घटना उनके धर्म-परिवर्तन की है। इनकी यह प्रतिज्ञा थी कि जिसका वचन न समझूँगा उसका शिष्य हो जाऊँगा। एक दिन राजा का मदोन्मत्त हाथी आलानस्तम्भ को तोड़कर नगर में दौड़ने लगा। हाथी ने अनेक लोगों को कुचल दिया। हरिभद्र हाथी से बचने के लिए एक जैन उपाश्रय में प्रविष्ट हुए। वहाँ याकिनी महत्तरा नाम की साध्वी को निम्न गाथा का पाठ करते हुए सुना।

चक्कीदुगं हरिपणगं चक्कीण केसवो चक्की।
केसव चक्की केसव दु चक्की केसव चक्कीय।।

इस गाथा अर्थ उनकी समझ में नहीं आया और उन्होंने साध्वी से उसका अर्थ पूछा। साध्वी ने उन्हें गच्छपति आचार्य जिनदत्त के पास भेज दिया। आचार्य से अर्थ सुनकर वे वहीं दीक्षित हो गये और बाद में अपनी विद्वता तथा श्रेष्ठ आचार के कारण आचार्य ने इनको ही अपना पट्टधर आचार्य बना दिया। जिस याकिनी महत्तरा के निमित्त से हरिभद्र ने धर्म परिवर्तन किया था, उनको इन्होंने अपनी धर्ममाता के रूप में पूज्य माना है और अपने को याकिनीसूनु कहा है।

समय निर्णय — आचार्य हरिभद्र का समय अनेक प्रमाणों के आधार पर वि० सं० 884 माना गया है। हरिभद्र सूरि वि० सं० 884 से 827 के काल पास में हुए मल्लवादी के समसामयिक विद्वान थे। कुवलयमाला के रचयिता उद्योतन सूरि ने हरिभद्र को अपना गुरु बताया है और कुवलयमाला की रचना ई० सन 778 में हुई है। मुनि जिनविजयजी ने हरिभद्र का समय ई० सन 750 — 790 माना है।

अतः हरिभद्र का समय ई० सन 800 — 810 के मध्य होना चाहिए।

रचनाएँ — आचार्य हरिभद्र सूरि जैन साहित्य के बहुत ही मेधावी और विचारशील लेखक हैं। इन्होंने धर्म, दर्शन, न्याय, कथासाहित्य एवं योगसाधनादि सम्बन्धी विभिन्न विषयों

पर गम्भीर और पाण्डित्यपूर्ण रचनाएँ उपलब्ध हैं। (I) समराइच्चकहा (II) धूर्ताख्यान जैसे सरल मनोरंजक आख्यान प्रधान ग्रन्थों का रचयिता अनेकान्तजयपताका जैसे क्लिष्ट न्यायग्रन्थ का रचयिता हो सकता है। हरिभद्र की साहित्य को दो श्रेणियों में विभक्त है।

(I) भाष्य, चूर्णि और टीका के रूप में तथा (II) मौलिक ग्रन्थ रचना के रूप में। आचार्य हरिभद्र को 1444 प्रकरणों का रचयिता माना गया है। राजशेखर सूरि ने अपने प्रबन्ध-कोश में इनकी 1440 प्रकरणों का रचयिता कहा है। इसकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित है।

(1) अनुयोगद्वारविवृति (2) आवश्यक सूत्रविवृति (3) ललित विस्तार (4) जीवाजीवाभिगम सूत्र वृत्ति (5) दशवैकालिक वृद्ध वृत्ति (6) श्रावकप्रज्ञप्तिटीका (7) न्यायप्रवेश टीका (8) अनेकान्तजयपताका (9) योगदृष्टिसमुच्चय (10) शास्त्रवार्तासमुच्चय (11) सर्वज्ञसिद्धि (12) अनेकान्तवादप्रवेश (13) उपदेशपद (14) धम्मसंगहणी (15) योगबिन्दु (16) षड्दर्शनसमुच्चय (17) योगशतक (18) समराइच्चकहा (19) धूर्ताख्यान (20) दिवाहपगरण। आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जो हरिभद्र ने कि रचना है।